एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

भारत में मीठी क्रांति और शहद मिशन: कृषि के लिए एक मीठा भविष्य

(सुरभि जांगिड़[1], *कमलेश गुर्जर[2], शुभम मिश्रा[3], सौरभ पांडे[4] एवं पूजा राठौड़[5])
[1] विस्तार शिक्षा विभाग, एमपीयूएटी, उदयपुर, राजस्थान
[2]विस्तार शिक्षा विभाग, एयू, जोधपुर, राजस्थान
[3]विस्तार शिक्षा प्रभाग, एनडीआरआई, करनाल, हरियाणा
[4]विस्तार शिक्षा और संचार विभाग, एएयू, आनंद, गुजरात
[5]बागवानी विभाग, एमपीयूएटी, उदयपुर, राजस्थान
*संवादी लेखक का ईमेल पता: kamleshgurjar0962@gmail.com

भारत में मीठी क्रांति

भारत ने अपने खाद्य उद्योग में कई क्रांतियाँ देखी हैं जैसे श्वेत, हरित क्रांति और पीली क्रांति जो क्रमशः दूध, कृषि और खाद्य तिलहन से संबंधित थीं। पीएम मोदी ने 2024 तक किसानों की आय दोगुनी करने की दृष्टि से 2016 में मीठी क्रांति का आह्वान किया था। इसे मधुमक्खी पालन और संबंधित गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए लॉन्च किया गया था। भारत में मीठी क्रांति जिसे हनी मिशन या मीठी क्रांति के नाम से भी जाना जाता है, वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन के प्रचार और विकास को बढ़ाने और उच्च गुणवत्ता वाले शहद और संबंधित उत्पादों के उत्पादन में तेजी लाने के लिए शुरू की गई थी। मीठी क्रांति मधुमक्खी पालकों और किसानों के लिए फसल उत्पादकता और परागण सेवाओं को बढ़ाने के लिए मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने से भी जुड़ी है। यह मिशन आदिवासियों, किसानों, बेरोजगार युवाओं और महिलाओं को मधुमक्खी पालन में शामिल करके उनके लिए रोजगार पैदा करने के साथ-साथ भारत के शहद उत्पादन को बढ़ाने से भी जुड़ा है। मीठी क्रांति भारत के छोटे और सीमांत किसानों की आय बढ़ाने में मदद करने से संबंधित है। भारत एक ऐसा देश है जो मुर्गीपालन और मवेशियों की आबादी से समृद्ध है, इस क्षेत्र में बढ़ने की काफी संभावना है। 2020 में, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के तहत भारत सरकार ने मीठी क्रांति को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन और शहद मिशन शुरू किया। सरकार ने आत्मनिर्भर अभियान के तहत राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मिशन (एनबीएचएम) की भी घोषणा की है।

चूंकि शहद को प्राकृतिक रूप से पौष्टिक उत्पाद माना जाता है, इसलिए समय के साथ उच्च गुणवत्ता वाले शहद की मांग बढ़ गई है। रॉयल जेली, मोम, पराग, और अन्य मधुमक्खी पालन उत्पाद भी फार्मास्यूटिकल्स, भोजन, पेय पदार्थ, सौंदर्य उत्पाद और अन्य सहित विभिन्न उद्योगों में व्यापक रूप से कार्यरत हैं। मधुमक्खी पालकों के सामने आने वाले प्रमुख मुद्दे वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन, न्यूनतम समर्थन मूल्य गुणवत्ता आश्वासन, ब्रांडिंग, परीक्षण, जैविक प्रमाणीकरण आदि हैं। भारत दुनिया के शीर्ष पांच शहद

उत्पादकों में से एक है और 2005-06 की तुलना में शहद उत्पादन में जबरदस्त वृद्धि हुई है। इसका तात्पर्य यह है कि 2024 तक किसानों की आय दोगुनी करने के लक्ष्य को प्राप्त करने में मधुमक्खी पालन एक महत्वपूर्ण कारक होगा। मिशन ने मधुमक्खी बक्से और शहद निकालने वाले यंत्रों के निर्माण के माध्यम से लगभग 25,000 अतिरिक्त मानव-दिवस सृजित करने के अलावा, 10,000 से अधिक नई नौकरियां पैदा की हैं। किसान विभिन्न प्रकार की फसलें उगाते हैं जिनमें दालें, सब्जियाँ, फल और अनाज शामिल हैं। ये मधुमक्खियों के लिए आदर्श मेजबान हैं और इस प्रकार मधुमक्खी पालन इन किसानों के लिए एक आकर्षक आजीविका विकल्प बन सकता है। अतः आय बढ़ने से फसलों का उत्पादन भी 15% बढ़ जायेगा।

"मीठी क्रांति" के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए, जिसे राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड (एनबीबी) द्वारा क्रियान्वित किया जा रहा है, एनबीएचएम राष्ट्रीय स्तर पर वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने और सुधार करना चाहता है। राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड ने राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन और शहद मिशन (एनबीएचएम) के हिस्से के रूप में प्रशिक्षण देने के लिए चार मॉड्यूल बनाए हैं और 30 लाख किसानों को मधुमक्खी पालन में प्रशिक्षित किया गया है। मीठी क्रांति को लागू करने के लिए झारखंड सबसे अच्छा राज्य है और इसमें काफी संभावनाएं हैं क्योंकि राज्य की जलवायु शहद उत्पादन के लिए उपयुक्त है और लगभग 30% भूमि जंगल से ढकी हुई है जो शहद उत्पादन के लिए सबसे महत्वपूर्ण संसाधन है। हाल ही में, उत्तर प्रदेश के एक गाँव में, खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) ने देश में पहली मोबाइल शहद प्रसंस्करण वैन का अनावरण किया है। मधुमक्खी पालकों को परिवहन लागत पर पैसा खर्च नहीं करना पड़ेगा या अपने शहद को दूर-दराज के स्थानों में प्रसंस्करण सुविधाओं तक ले जाने की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ेगा। यह प्रयास "मीठी क्रांति" को समर्थन देने के लिए किया जा रहा है।

मीठी क्रांति की चुनौतियाँ

- वित्तीय सेवाएँ और ऋण सुविधाएं प्रशिक्षण
- आवश्यकता-आधारित प्रशिक्षण और कौशल उन्नयन सुनिश्चित करना
- गुणवत्ता मानकों के प्रति जागरूकता की आवश्यकता
- मौसमी प्रबंधन और प्रवासन पर हैंडहोल्डिंग समर्थन को मजबूत करना
- एफपीओ निर्माण और क्लस्टर-आधारित दृष्टिकोण के लिए मौजूदा योजनाओं के साथ अभिसरण
- ब्रांडिंग और बाजार संबंधों को औपचारिक बनाना
- माल ढुलाई लागत में वृद्धि
- उच्च परमाणु चुंबकीय अनुनाद परीक्षण लागत (मिलावट और अन्य हेरफेर के परीक्षण के लिए उपयोग किया जाता है)
- शहद निर्यात के चरम मौसम में कंटेनरों की सीमित उपलब्धता
- निर्यात के लिए अपर्याप्त प्रोत्साहन।

राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मिशन (NBHM)

राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन और शहद मिशन की घोषणा केंद्र सरकार द्वारा 2020 में आत्मनिर्भर भारत पैकेज के हिस्से के रूप में की गई थी। यह योजना राष्ट्रीय मधुमक्खी बोर्ड (NBB) द्वारा कार्यान्वित की गई है और 2020 से 2023 तक तीन वर्षों के लिए अनुमोदित है। इस योजना का उद्देश्य है मीठी क्रांति के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए भारत में वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन के समग्र विकास और प्रचार पर। यह योजना कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन है। यह 100% केंद्र सरकार द्वारा वित्त पोषित योजना है। यह योजना मधुमक्खी पालन से संबंधित विभिन्न अन्य योजनाओं जैसे केवीआईसी के

हनी मिशन, बागवानी के एकीकृत विकास मिशन (MIDH), और ग्रामीण विकास, एमएसएमई, आयुष, वाणिज्य और उद्योग, आदिवासी मामलों आदि मंत्रालयों के साथ मिलकर काम करेगी। एनबीएचएम का मुख्य उद्देश्य कृषि और गैर-कृषि परिवारों के लिए आय और रोजगार सृजन के लिए मधुमक्खी पालन उद्योग के समग्र विकास को बढ़ावा देना, कृषि/बागवानी उत्पादन को बढ़ाना, एकीकृत मधुमक्खी पालन विकास केंद्र (IBDC) की स्थापना सहित बुनियादी सुविधाओं का विकास करना है। सीओई, शहद परीक्षण प्रयोगशालाएं, मधुमक्खी रोग निदान प्रयोगशालाएं, कस्टम हायरिंग सेंटर, एपी-थेरेपी केंद्र, न्यूक्लियस स्टॉक, मधुमक्खी प्रजनक, आदि और मधुमक्खी पालन के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण। शहद मिशन के तहत, केवीआईसी किसानों या मधुमक्खी पालकों को मधुमक्खी कालोनियों की जांच, मधुमक्खी के दुश्मनों और बीमारियों की पहचान और प्रबंधन के साथ-साथ सभी मौसमों में मधुमक्खी कालोनियों के प्रबंधन, मधुमक्खी पालन उपकरणों से परिचित कराने और शहद निकालने और मोम शुद्धिकरण के बारे में व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करता है।

योजना के उद्देश्य:

- कृषि और गैर-कृषि परिवारों के लिए आय और रोजगार सृजन के लिए मधुमक्खी पालन उद्योग के समग्र विकास को बढ़ावा देना।
- बागवानी/कृषि उत्पादन को बढ़ाना।
- एकीकृत मधुमक्खी पालन विकास केंद्र (आईबीडीसी)/सीओई, मधुमक्खी रोग निदान प्रयोगशालाएं, शहद परीक्षण प्रयोगशालाएं, कस्टम हायरिंग केंद्र, न्यूक्लियस स्टॉक, एपी-थेरेपी केंद्र, मधुमक्खी प्रजनक आदि की स्थापना सहित ढांचागत सुविधाएं विकसित करना।
- मधुमक्खी पालन के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाएं।
- शहद और अन्य मधुमक्खी उत्पादों के स्रोत का पता लगाने के लिए ब्लॉकचेन/ट्रेसेबिलिटी प्रणाली विकसित करें
- मधुमक्खी पालन में आईटी उपकरणों का उपयोग करना, जिसमें ऑनलाइन पंजीकरण आदि शामिल है।
- संभावित क्षेत्रों में हनी कॉरिडोर बनाएं और सक्षम करें।
- मधुमक्खी पालन/शहद उत्पादन में कृषि-उद्यमियों और कृषि-स्टार्टअप को प्रोत्साहित करें।
- व्यापारियों/निर्यातकों और मधुमक्खी पालकों के बीच व्यापार समझौतों को बढ़ावा देना।
- शहद और अन्य उच्च मूल्य वाले मधुमक्खी उत्पादों के उत्पादन के लिए मधुमक्खी पालन उद्योग में नवीनतम और अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों और कौशल विकास को बढ़ावा देना, विकसित करना और फैलाना।
- एसएचजी, एफपीओ आदि जैसे सामूहिक दृष्टिकोण के लिए एक संस्थागत ढांचे के माध्यम से मधुमक्खी पालकों को बढ़ावा देना।
- मधुमक्खी पालन के माध्यम से विविधीकरण द्वारा अधिक मात्रा और अच्छी गुणवत्ता वाले शहद और अन्य उच्च मूल्य वाले मधुमक्खी उत्पादों जैसे मोम, मधुमक्खी पराग, रॉयल जेली, प्रोपोलिस, कंघी शहद, मधुमक्खी जहर, आदि का उत्पादन करके आर्थिक, सामाजिक और पारिस्थितिक लाभों को बढ़ाएं। घरेलू और वैश्विक बाज़ारों के लिए.

राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं शहद मिशन उप-मिशन

एनबीएचएम के तीन उप-मिशन या उप-योजनाएं हैं, अर्थात् मिनी मिशन - I, II और III।

मिनी मिशन I	मिनी मिशन II	मिनी मिशन III
• इसका उद्देश्य वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन के बारे में जागरूकता पैदा करना है। • यहां, वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन को अपनाकर परागण के माध्यम से विभिन्न फसलों के उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। • राज्यों को राज्य मधुमक्खी बोर्ड/राज्य मधुमक्खी पालन और शहद मिशन की स्थापना में सहायता दी जाएगी।	• यहां, मधुमक्खी पालन, मधुमक्खी उत्पादों के कटाई के बाद के प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जिसमें संग्रह, प्रसंस्करण, भंडारण, विपणन, मूल्यवर्धन आदि शामिल हैं।	• यहां, विभिन्न राज्यों/क्षेत्रों और कृषि-जलवायु और सामाजिक-आर्थिक स्थितियों के लिए अनुसंधान और प्रौद्योगिकी के निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

मधुमक्खी पालन का महत्व

मधुमक्खी पालन से किसानों, अर्थव्यवस्था और सामान्य तौर पर पर्यावरण को कई लाभ होते हैं। मधुमक्खी पालन के लाभ हैं:

- परागण समर्थन के माध्यम से, यह फलों, सब्जियों, तिलहन, दालों आदि जैसे उत्पादों की गुणवत्ता और मात्रा को बढ़ाता है।
- यह पर्यावरण और कृषि के सतत विकास में मदद करता है।
- यह जैव विविधता को बनाए रखने में सहायता करता है।
- यह कृषि में एक महत्वपूर्ण इनपुट है और कम लागत वाली तकनीक है।
- यह आजीविका का एक स्रोत है और रोजगार पैदा करता है।
- यह किसानों की आय में सुधार और उनके जीवन स्तर को बेहतर बनाने में मदद करता है।
- मधुमक्खियाँ पर्यावरण के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यदि मधुमक्खियाँ नहीं हैं, तो परागण नहीं होता है, जो अधिक पौधों के उत्पादन के लिए आवश्यक है, और इसलिए जानवरों और परिणामस्वरूप पृथ्वी पर जीवन के लिए आवश्यक है।